2018-19

Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

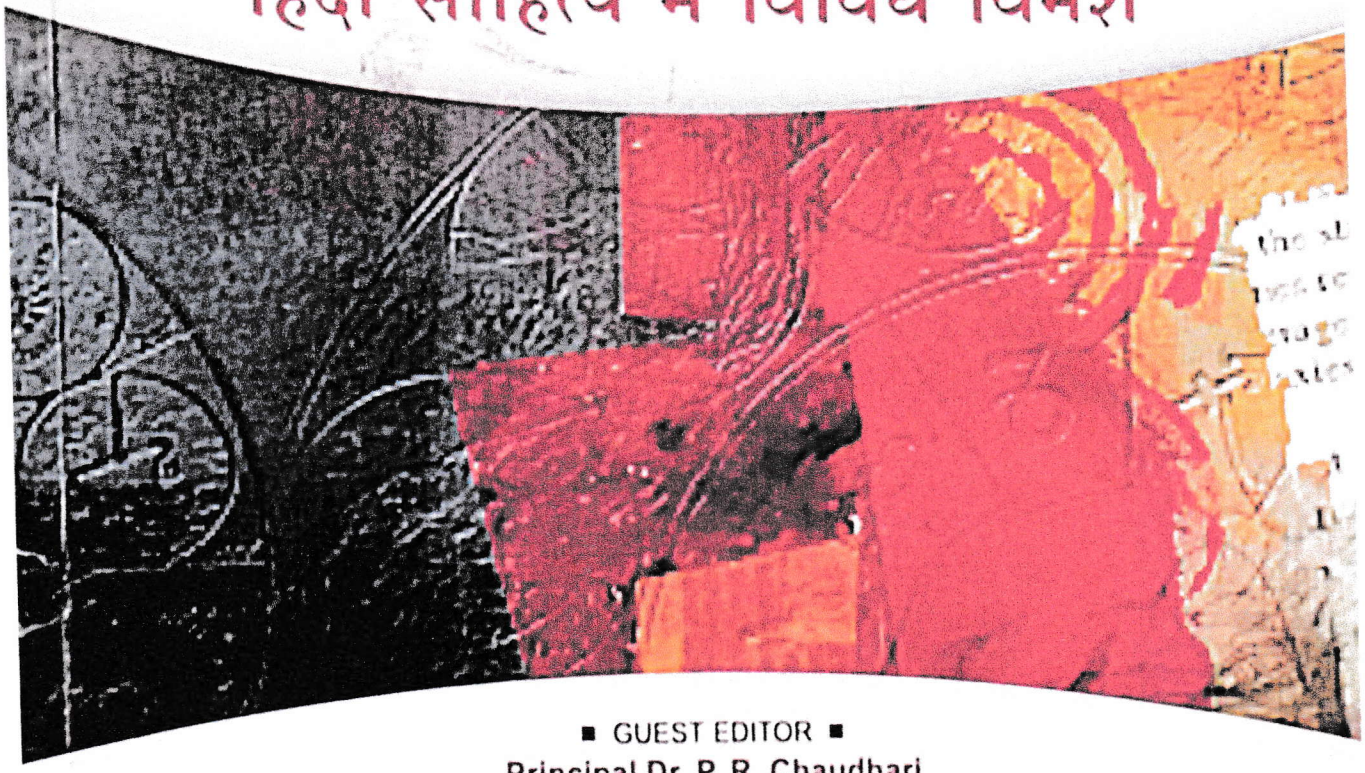

■ GUEST EDITOR ■

Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■

Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■

Dr. Kalpana L. Patil

Dr. Ishwar P. Thakur

Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■

Mr. Dhanraj T. Dhangar

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
March-2019 Special Issue - 164

Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance

Guest Editor:
Dr. C. J. Khillare
Principal
Rayat Shikshan Sanstha's
Rajarshi Chhatrapati Shahu College,
Kolhapur, Dist. Kolhapur.

Executive Editor of the issue:
Mr. S. M. Mahajan
Dr. Mrs. M. B. Desai
Mrs. M. K. Kannade
Dr. Mrs. B. S. Puntambekar
Dr. M.M. Bandhare
Mr. S.A. Jadhav
Mr. V.K. Akhade
Miss. Dr. S. R. Kulkarni
Miss. A. V. Jadhav
Mr. B. B. Ghurke

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

INDEX

No.	Title of the Paper — Author's Name	Page No.
1	Gandhi Ethical Philosophy for Humanity (A Critical Study) — Tejram Pal	12
2	Relevance of Gandhian Principles of Management and Leadership - Socio-Economic and Political View — Suvarna Kumathekar & Dr.Machhindra Sakate	18
3	Relevance of the Philosophy of Mahatma Gandhi — Mr. Mahadev Sontakke	23
4	Gandhi's Reflections on Everyday Life in India — Mr. Ganesh Narkulwad	26
5	Environmentalism : A Gandhian Perspective — Ketan Bhosale	31
6	An Economic Approaches of Mahatma Gandhi — Reshma Shirgave	35
7	Perception of Khadi among College going Student's in Kolhapur — Mr. Kuldeep Ghorapade, Dr. C. S. Kale	39
8	Economic Thoughts of Mahatma Gandhi: An Overview — Mr. Ashish Bhasme	43
9	Revisiting the 'Mahatma' through Richard Attenborough's 'Gandhi' — Dr. Sanjay Sathe	46
10	Gandhi's View on Cleanliness and Swach Bharat Abhiyan and Its Present Status — Dr. Bhagyashree Puntambekar	49
11	Nonviolence: The Weapon of Gandhiji — Mrs. Komal Oswal	54
12	Clean India Mission and Mahatma Gandhi : With Special Reference to Maharashtra — Prof. Valmik Garje	57
13	Gandhiji's Gram Vikas and Swadeshi Movement through Food Processing Industry in India — Dr. Smt. Anagha Pathak	62
14	Mahatma Gandhi's Thoughts on Women Empowerment and Its Present Relevance — Nazir Pathan & Dr. N. S. Dongare	67
15	Mahatma Gandhi's Decentralization Policy in Today's Scenario — Mrs. Priyanka Suyog Patil	71
16	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस मधील महात्मा गांधींच्या नेतृत्वाचा उदय - एक चिकित्सक अभ्यास — प्रा. संदिप महाजन	74
17	गांधीवाद के प्रमुख आयाम – सत्य और अहिंसा — डॉ.सरोज पाटील	79
18	राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में गांधीवादी चेतना — डॉ.रविंद्र पाटील	82
19	महात्मा गांधी और अहिंसा — प्रा.अजित लिपारे	84
20	महात्मा गांधीजींच्या विचारातून, चळवळीतून घडलेली भारतीय स्त्री — रीना कांबळे	86
21	महात्मा गांधीजीची ग्रामविकास संकल्पना — प्रा.बी.आर.नदाफ	89
22	एकविसाव्या शतकातील सर्वात मोठी भेट – महात्मा गांधी — प्रा.प्रविण डांगे	93
23	महात्मा गांधी यांचे सर्वोदय, स्वयंपूर्ण खेडं याविषयीचे विचार — डॉ.के.डी.पाटील	96
24	महात्मा गांधीजींचे विज्ञानवादी विचार — मिलिंद पाटील व समाधान जाधव	100
25	सत्य व अहिंसा : महात्मा गांधीजींच्या शिकवणुकीचे मुख्य आधारस्तंभ — श्री.डी.एन.महाडिक व श्री.व्ही.के.जाधव	103
26	महात्मा गांधीजींचा आर्थिक दृष्टिकोन — डॉ.एम.बी.चौगुले	110
27	महात्मा गांधीजीच्या ग्रामीण विकासाच्या तत्वज्ञानाची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता — सुकेशिनी जोगदंड	116
28	महात्मा गांधीच्या चळवळीतील वीरांगना अरुणा असफ अली — डॉ. सिंधू आवळे	122
29	शोधनिबंधाचे नाव-महात्मा गाधीना अभिप्रेत असणारा स्वच्छता विषयक वैन्यानिक दृष्टिकोन — श्री.अजितकुमार पाटील	125

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 164 - Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
March-2019

राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में गांधीवादी चेतना

डॉ. रविंद्र पाटील
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर
E-Mail – rcpatilshahu@gmail.com

इतिहास के पन्नों को अगर पलटकर देखा जाय तो सबसे महत्वपूर्ण बात यही स्पष्ट होती है कि मानव ने अपनी स्वतंत्रता के लिए सदैव संघर्ष किया हैं । इसी स्वतंत्रता के लिए भारत में निरंतर संघर्ष हुए है। भारत पर अंग्रेजों की हुकुमत तथा भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए भारतीय जनता द्वारा किया गया संघर्ष और सन् १९४७ में स्वतंत्रताप्राप्ति ये भारतीय इतिहास की ऐसी महत्वपूर्ण घटनाएँ है जिनके प्रभाव स्वरूप हिंदी साहित्य में राजनीतिक चेतना और स्वतंत्रताप्राप्ति की भावना की नई दिशाएँ विकसित हुई। इसी कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के वातावरण से प्रेरित होकर उस काल के रचनाकारों ने अतीत की स्वर्णिम गाथा और स्वातंत्र्य उन्माद की क्रांतिकारी चेतना से साहित्य को पल्लवित कर दिया। उस काल के साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर अपने दायित्व को निभाया है। इनमें राहुल सांकृत्यायन का स्थान महत्वपूर्ण हैं।

राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में स्वदेशी तथा बहिस्कार आंदोलनों के साथ–साथ 'किसान आंदोलन', सत्याग्रह, 'क्रांतिकारी आंदोलन', 'असहयोग आंदोलन' जैसे आंदोलनों का चित्रण किया है। राहुल जी ने कथा साहित्य मे महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलनो एवं समाजहित के कार्यो का खुलकर चित्रण किया है।

राहुल सांकृत्यायन ने कथा साहित्या में असहयोग आंदोलन का चित्रण बहुत ही गहराई में जाकर किया है। 'जीने के लिए' उपन्यास में असहयोग आंदोलन के कुछ प्रसंग चित्रित है। प्रथम विश्वयुद्ध में 'विक्टोरियाक्रास' पदक जीतने के बाद नायक देवराज स्वदेश लौटकर स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लेने का दृढसंकल्प करता है। इंग्लैंड से भारत वापस आता है। गॉव आते समय देश में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन का जायजा लेने के लिए नासिक में उतर जाता हैं। लोगों से असहयोग आंदोलन के बारे में चर्चा करता है। विवच्य प्रसंग में राहुल जी ने महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन का समाज पर किस प्रकार प्रभाव पडा था इसका वर्णन करते हुए लिखते है, "सुराज के बारे में पूछते है न बाबू? हमारे जिले में जैसा लोगों ने सुराज को माना है, वैसा तो मुझे कर्द ओर नहीं दिखाई पड़ा। भटटी और ताडी की दुकान पर सेवासन्ती (स्वयं सेवक) पहरा देते है। यहा तो खुलेआम गॉजा बिक रहा हैं । हमारे यहॉ तो देवता पर भी चढाने के लिए गॉजा नहीं लेने देते। कंहते है देवता भी गांधी बाबा की बात मान गये है।"[१] अत: यहॉ लेखक ने तत्कालीन समाज पर महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन के प्रभाव का चित्रण किया है।

अगस्त, १९२० के असहयोग आंदोलन में नायक देवराज भी अपना योगदान देता है। 'चौरी–चौरा' के खुन–खुराबे के कारण अहिंसाबादी महात्मा गांधी आंदोलन बीच में ही रोक देते है परिणामत: पचास हजार आंदोलकों को गिरफतार किया जाता है। इसी के चलते लोगों ने आंदोलन के प्रति निराशा छा जाती है। इस आंदोलन के नायक देवराज को बंदी बनाया जाता हैं। लेखक 'चौरी–चौरा' की हिंसा की घटना से गांधी जी के द्वारा आंदोलन रोकने की बात का विरोध करते हुए लिखते हैं, " जनआंदोलन ने गांधी जी को पैदा किया है, गांधी जी यदी जनआंदोलन को पैदा करने का खयाल रखते है, तो गलती करते है। पराजय के कारण हमारा और विशृंखलित सेना को फिर से संघटित करना बहुत मश्किल काम हैं।"[२] यहॉ लेखक ने गांधी जी द्वा आंदोलन को बीच में रोकने की बात का खंडन किया हैं। वे इस घटना को भविष्य के लिए खतरा मानते है।

उपन्यास के समान ही राहुल जी के कहानियों में भी महात्मा गांधी जी के विचार एवं आंदोलन का विस्तृत चित्रण हुआ है। 'सफदर' कहानी में असहयोग आंदोलन के चित्र प्रस्तृत हैं। लखनौ का सुविख्यात बेरिस्टर सफदर गांधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर अपनी बाकी जिंदगी देश सेवा के लिए अर्पन करना चाहता है। वह अपनी ठॉट–बॉट की जिंदगी त्यागकर देश में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग

लेता है, साथ ही अपने मित्र शंकरसिंह को भी स्वतंत्रता संग्राम मे भाग लेने के प्रेरित करता है। अपने विदेशी कपड़े, फर्निचर आदि बेच देता है। स्वदेशी वस्तुओं का स्वीकार करता है। असहयोग आंदोलन से प्रभावित सफदर अपनी दो गाडियाँ, बंगला तथा महंगे फर्निचर को बेचना चाहता है, परंतु वह अपनी महंगी विदेशी कपड़ों को नहीं जलाना चाहता। अपना निर्णय पत्नी सकीना को बताते हुए कहता है, "गांधी के असहयोग में दाखिल हो रहा हूँ, इसलिए कह रहा हूँ? मैं उन्हें जलाने के पक्ष में नहीं हूँ, खासकर विलायती कपड़ो की होली काफी जलाई जा चुकी है। लेकिन खद्दर का कुर्ता और पायजामा सिलकर परसो ही आ रहा हैं।"[३] अत: यहाँ स्पष्ट है कि महात्मा गांधी के प्रभाव से अनेक पढे लिखे सफदर जैसे लोग अंग्रेजों की नौकरी का त्याग करके स्वतंत्रता संग्राम कुद पडे थें। उन्होंने विदेशी वस्तुओं को त्यागकर स्वदेशी का खुशी खुशी से स्विकार किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय पुर विश्व में अशांति और विद्रोह छाया रहा। इसका सीधा प्रभाव भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर भी हुआ। परिणाम के चलते विश्वयुद्ध के समाप्ती के भारत में असहयोग आंदोलन ने जोर पकडा। पूरे देश में इसका बहुत बडा प्रभाव पडा। 'स्वराज कहानी के एक प्रसंग में कहानीकार लिखते है, "प्रथम विश्वयुद्ध के बाद देश में राजनीतिक जागृति बडे जोर से फैली। असहयों आंदोलन ने आकर आग लगा दी थी। लोग अंग्रेजों के खिलाफ खुलकर बोलने लगे कानुन तोडने भी उन्हें आना–कानी नहीं रही।"[४]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता संग्राम के समय का जनमानस, गांधी जी का प्रभाव तथा लोगों में स्वतंत्रता प्राप्ति की आस जैसी बातों का चित्रण राहुल ने कथा साहित्य में किया है। वे महात्मा गांधी जी के विचारों का खुलकर समर्थन करते हुए दिखाई देते है।

संदर्भ संकेत –

१. राहुल सांकृत्यायन, जीने के लिए, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्र– १७०
२. वही, पृष्ठ क्र – १९१
३. राहुल सांकृत्यायन, सफदर (ओग्ला से गंगा), किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्र– ३६८
४. राहुल सांकृत्यायन, स्वराज,(कनैला की कथा) किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ क्र– १२७